Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 02, July-December, 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

हिन्दुस्तानी संगीत में वाद्यवृन्द (बैंड)

PARNEET KAUR

Ph.D Research Scholar, Panjab University Chandigarh

शोध सार

संगीत अनंत कला है, जिसे ब्रह्मा का रूप कहा गया है। संगीतकारों ने प्राचीन काल से ही 'संगीत' शब्द में गायन, वादन तथा नृत्य का समावेश माना है। विभिन्न वाद्य यंत्रों का एक साथ वादन वैदिक काल से चला आ रहा है। भरतकाल तक आते-आते संगीत का विकास नृत्य के सहारे ही हुआ तथा भरतमुनि द्वारा रचित 'नाटयशास्त्र' में आतोद्य अध्याय में वाद्यों का उल्लेख मिलता है। जहां वाद्यों के सामूहिक वादन को 'कुतप' की संज्ञा दी गई। पाणिनि काल में वाद्य के लिए 'तूर्य' शब्द का प्रयोग किया गया। आधुनिक 'कुतप', बैंड के रूप में विभिन्न गायन तथा वादन शैलियों में प्रयोग हो रहा है। जिसके कई रूप जैसे पॉप, जैज, रॉक, मिलिट्री बैंड, पुलिस बैंड आदि प्रसिद्ध है। चाहे 'बैंड' अंग्रेजी भाषा का शब्द है परन्तु इस शैली में पारम्परिक तथा विदेशी वाद्यों का प्रयोग हो रहा है। यह कहना उचित होगा कि आधुनिक बैंड पर विदेशी संगीत का प्रभाव मुख्य रूप से देखा जा सकता है। वर्तमान में बैंड वादन नौजवान वर्ग की पसंद बन चुका है और इसमें कई नये वाद्यों का प्रयोग कर प्रसिद्ध संगीतज्ञों के द्वारा नवीन प्रयोजन किये जा रहे हैं।

विधि - सर्वेक्षण विधि।

मुख्य शब्द: बैंड वादन, वृन्दवादन, ऑर्केस्ट्रा।

भूमिका

संगीत अनंत कला है जिसे ब्रह्मा का रूप कहा गया है। संगीतकारों ने प्राचीन काल से ही 'संगीत' शब्द में गायन, वादन तथा नृत्य का समावेश माना है। विभिन्न वाद्य यंत्रों का एक साथ वादन वैदिक काल से चला आ रहा है, जिसे शास्त्रों में 'कुतप' की संज्ञा दी गई है। पत्थर युग के समय भी संगीत किसी ना किसी रूप में विकसित होता रहा है। अपने मन की मनोवृतियों को व्यक्त करने हेतु संगीत का प्रयोग करना आरंभ किया होगा। जब मानव असभ्य था तो अपने मनोंरंजन के लिए प्राकृतिक वाद्य जैसे पत्थर का टकराव, लकड़ी का टकराव, हड्डी आदि वस्तुओं के वादन की ध्वनि से अपना चितरंजन करता होगा। धीरे-धीरे सभ्यता के विकास के चलते वैदिक काल में भी गायन तथा नृत्य के संगति में वाद्यों का प्रयोग निरंतर चलता रहा। वाद्यों के विभिन्न प्रकार विकसित हुये। भरतकाल तक आते-आते संगीत का विकास नृत्य के सहारे ही हुआ तथा भरतमुनि द्वारा रचित 'नाटयशास्त्र' में आतोद्य अध्याय में वाद्यों का उल्लेख मिलता है। जहां वाद्यों के सामूहिक वादन को 'कुतप' की संज्ञा दी गई। पाणिनि काल में वाद्य के लिए 'तूर्य' शब्द का प्रयोग किया गया। आधुनिक 'कुतप' बैंड के रूप में विभिन्न गायन तथा वादन शैलियों में प्रयोग हो रहा है। जिसके कई रूप जैसे पॉप, जैज, रॉक, मिलिट्री बैंड, पुलिस बैंड आदि प्रसिद्ध है। चाहे 'बैंड' अंग्रेजी भाषा का शब्द है परन्तु इस शैली में पारम्परिक तथा विदेशी वाद्यों का प्रयोग हो रहा है। यह कहना उचित होगा कि आधुनिक बैंड पर विदेशी संगीत का प्रभाव मुख्य रूप से देखा जा सकता है। वर्तमान में बैंड वादन नौजवान वर्ग की पसंद बन चुका है और इसमें कई नये वाद्यों का प्रयोग कर प्रसिद्ध संगीतज्ञों के द्वारा नवीन प्रयोजन किये जा रहे हैं।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 02, July-December, 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

संगीत

संगीत ईश्वरीय यह वाणी है, अंतः वह ब्रह्मरूप ही है। मूलभूत नाद - ब्रह्म से संगीत की उत्पत्ति हुई है। ब्रह्माण्ड की प्रत्येक चराचर वस्तु में नाद व्याप्त है। अतएव इस नाद को 'नाद ब्रह्म' की संज्ञा दी गई है। इसी से राजयोगी महाराज भतृंहरि ने अपनी पुस्तक 'वाक्यपदी' में नाद को ही ब्रह्म माना है। वे कहते हैं

"अनादिनिधनं ब्रह्म शब्दत्वापदक्षरम्।

विवर्तते अर्थभावेन प्रक्रिया जगतोयतः"।।

अर्थात - शब्दरूपी ब्रह्म अनदि, विनाश रहित और अक्षर है तथा उसकी विवर्त प्रक्रिया से ही यह जगत् भासित होता है। विद्वानों ने संगीत की उत्पत्ति के भिन्न-भिन्न आधार माने हैं।

"नृत्य वाद्यनुगं प्रोक्त वाद्यं गीतानुवृति च।

अतो गीत प्रधानत्वादत्र ऽऽ दावभिधीयते।।"

अर्थात गान के अधीन वादन और वादन के अधीन नृत्य है। ग्रीक विद्वान आगस्टाइन भी संगीत की परिभाषा में तीनों का समावेश मानते हैं। वाद्य, संगीत का अपरिहार्य अनुषंग है। वाद्य का शब्दिक अर्थ है वादनीय या बजाने योग्य तंत्र विशेष। यह शब्द 'वद' धातु से निष्पन्न होता है। "वदतीति वाद्यम्" जो बोलता है वही वाद्य होता है।

वाद्य

गीत का अनुकरण करने के लिए वाद्यों का निर्माण किया गया। भारत में वैदिक संगीत के अन्तर्गत प्रातः एवं सांयकाल में गायन तथा वादन से देव आराधना के समय भिन्न-भिन्न वाद्य ध्वनियों का प्रयोग वैदिक काल में किया जाता था। वाद्यों में तन्त्री और सुषिर वाद्य स्वर के लिए मृदंगदि, चर्म और घण्टा और घन वाद्यों का प्रयोग ताल के लिये एवं सामगान में दुन्दभि, वाण और वीणा के साथ किया जाता रहा है। इस संगीत को देवालय संगीत की संज्ञा दी गई। धीरे-धीरे इसे नाट्य और नृत्य-नाटिकाओं द्वारा वाद्य समूह का पूर्ण प्रश्रय भी मिलने लगा।

अनेक वाद्य या वाद्य समूह एक साथ संयुक्तरूप से वादन प्राचीन संगीत की परम्परा रही है। "नाट्यशास्त्र" के अतोद्य प्रकरण में महर्षि भरत ने विस्तार से वृन्द की चर्चा की है और वृन्द-विशेष को 'कुतप' की संज्ञा दी है। 'कुतप' को भरत ने 'ततकुतप', 'अवनद्ध कुतप' और 'नाट्याश्रय कुतप' इन तीनों भागों में वर्गीकृत किया है। पाणिनी-काल में वाद्य के लिये 'तूर्य' शब्द का प्रयोग किया गया है। जिसके वादकों का समूह 'तूर्यांग' कहलाता था।

संगीत रत्नाकर के पश्चात वाद्य वृन्द (ऑर्केस्ट्रा) का प्रयोग मुगलकाल में यत्र-तत्र दिखाई पड़ता है। वस्तुतः मुगलकाल में 'कुतप' की संज्ञा 'नौबत' को प्रदान की गयी थी। जिसमें दमामा, नक्कारा, ढोल, कर्नी, सुर्न, नफ़ीरी, सींग, साज़ और झांझ इन नौ वाद्यों का वादन किया जाता था। यह आज के बैंड के समान एक प्रकार का बैंड था। 'नौबत' का विस्तृत उल्लेख "आईने अकबरी" में मिलता है। शारंगदेव द्वारा रचित संगीत रत्नाकर' के अनुसार गायक और वादकों के समूह को 'वृन्द' कहा गया है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 02, July-December, 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

आधुनिक वाद्यवृन्द

भारत में आधुनिक ऑर्केस्ट्रा (वाद्यवृन्द) की शुरुआत 18 वीं शताब्दी के अन्त से मानी जाती है। परंतु ऑर्केस्ट्रा एक सुनिश्चित एवं सन्तुलित वादक समुदाय के रूप में 19 वीं शताब्दी में उभर कर सामने आया। विदेशों में ऑर्केस्ट्रा शब्द का प्रयोग 17 वीं शताब्दी से शुरु हुआ। ऑर्केस्ट्रा शब्द विदेशी होते हुए भी वाद्यवृन्द शब्द के रूप में भारत में प्रयोग होने लगा। भारत में मुस्लिम शासनों के पतन के बाद अंग्रेजों के शासन काल में धीरे-धीरे नाटक का पुनः सुत्रपात हुआ और भारतीय रंगमंच पर क्षेत्रीय भाषाओं में नाटक खेले जाने लगे, जिसका श्रेय सुरेंद्र मोहन को जाता है।

नाटकों के सहारे ऑर्केस्ट्रा (वाद्यवृन्द) का नया रूप सामने आया। लगभग 100 वर्ष पूर्व ऑर्केस्ट्रा की नींव बंगाल में पड़ चुकी थी। सुरेन्द्र मोहन टैगोर और जोतिन्द्र मोहन टैगोर ने इस पद्धति पर कई प्रयास किये। 1859 में प्रथम भारतीय ऑर्केस्ट्रा रंगमंच पर स्वतंत्र रूप से प्रदर्शित किया गया।

भारतीय ऑर्केस्ट्रा (बैंड) के स्वतंत्ररूप को विकसित करने में उस्ताद अल्लाउद्दीन खां का नाम उल्लेखनीय है। सन् 1918 में खां साहब ने प्रथम भारतीय "मैहर बैंड" की नींव रखी थी। ऑर्केस्ट्रा (बैंड) के प्रचार में श्री तिमिर बरन, पंडित रविशंकर, श्री ब्री शिराली, उस्ताद अलीअकबर, श्री देवधर, जुबिन मेहता आदि सगीतज्ञों ने बहुत योगदान दिया है। उस्ताद अल्लाउद्दीन खां ने अनाथ बच्चों को लेकर एक वाद्य-वृन्द बनाया जिन्हें वह स्वयं अभ्यास करवाते थे।

ऑर्केस्ट्रा (बैंड) वाद्यों की ऐसी भाषा है जो एकता और सामाजिक भावना का सन्देश देती है। 19 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में 20 वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में ऑर्केस्ट्रा (बैंड) के लिए 'वाद्य-भाण्ड' जैसी संज्ञाओं का प्रयोग किया जाता था। कर्नाटक में इसे 'वाद्य कचहरी' कहा जाता था।

बैंड अंग्रेजी भाषा का शब्द है, जिसे हिन्दी में वृन्द कहा गया है। अंगे्रजी भाषा में यह शब्द कई अर्थ में प्रयुक्त होता है। जैसे - फ़ीता या पट्टा, गिरोह या समूह, एवं संगीतकारों का समूह। Concise Oxford English Dictionary में बैंड के अर्थ दो प्रकार में बताए गये हैं- A small group of musician and cocolists who play, pop, jazz or rock music. 2) A group of musician play brass, wind of percussion instruments. "बैंड" शब्द का उपयोग उन लोगों के समूह का वर्णन करने के लिए भी किया जाता है जो नृत्य बैंड जैसे समूह में एक साथ प्रदर्शन करते हैं।

ब्रास बैंड के अतिरिक्त भारतीय वाद्यों का भी ऑर्केस्ट्रा (बैंड) बना और बम्बई के पारसी थियटरों में इसका प्रचार बढ़ा। इसके पश्चात 19 वीं शताब्दी में भारतीय सिनेमा ने हॉलीवुड से प्रेरणा ग्रहण कर अपना संगीत अलग गढ़ना शुरु कर दिया। जिसकेक अंतर्गत विदेशी वाद्यों का प्रयोग स्वतंत्र रूप में होने लगा। पुलिस और भारतीय सेना के बैंड के लिए "कदम कदम बढाए जाओ, देशों का सरताज भारत" आदि जैसी धुनें बनने लगी। विभिन्न अवसरों जैसे शोभा- यात्राओं एवं शादी विवाह आदि पर भी वादन का प्रयोग होने लगा। बैंड का प्रयोग भारत की विभिन्न विधाओं जैसे नृत्य, नाट्यकला आदि के साथ किया जाने लगा है।

बैंड की दो श्रेणीयां प्रचलित हैः

1) कन्सर्ट बैंड की श्रेणी में पॉप, रॉक या जैज बैंड का संगीत आता है। पाश्चात्य संस्कृति के बढ़ते प्रभाव के फलस्वरूप भारत में भी बैंड संस्कृति का प्रसार बढ़ रहा है। ऐसे बैंड मैं फ्यूज़न भी पर्याप्त मात्रा में सुनाई देता है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 02, July-December, 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

2) मार्चिंग बैंड में सभी बैंड जैसे मिलिट्री बैंड, पुलिस बैंड, एयर फोर्स बैंड, नेवी बैंड और विवाह समारोह आदि में चलने वाले ब्रास बैंड आते हैं। आज भारत में तीस हजार से अधिक ब्रास बैंड है।

आधुनिक युग अर्थात 21 वीं सदी अन्तर्राष्ट्रीय संदर्भ का काल प्रवाह है। व्यवसायिकता मुख्य होने के कारण आज हर तरफ जैज, रॉक, पॉप बैंड संगीत का प्रचार अधिकतम हो रहा है। बैंड संगीत अब मात्र कला नहीं है, वह अब व्यवसाय का मुख्य साधन बन रहा है। नौजवान पीढ़ी बैंड वादन का सहारा लेकर अपनी आजीविका कमा रही है, जिनमें पराम्परिक वाद्य तथा विदेशी वाद्यों का प्रयोग किया जाता है। इसके साथ ही शास्त्रीय संगीत में भी कहीं न कहीं विदेशी वाद्यों की संगत देखी जा सकती है। अतः बैंड संगीत केवल नौजवान पीढ़ी की नहीं अपितु अन्य लोगों की भी पसंद बनता जा रहा है।

निष्कर्ष

बैंड वादन का प्राचीनकाल से लेकर अब तक का अवलोकिन किया जाये तो यह कहने में कोई संदेह नहीं है कि आज बैंड वादन का प्रचार-प्रसार अधिक हो रहा है। आज भारत में कन्सर्ट बैंड यानी पॉप, जैज, रॉक तथा ब्रास बैंड जैसे बारात बैंड व मिलिट्री बैंड आदि के असंख्य बैंड प्रचलित हैं। इन बैंड में भारतीय तथा विदेशी वाद्यों का प्रयोग किया जा रहा है। वर्तमान समय के विश्वीकरण के कारण बैंड संगीत में नवीन प्रयोजन भी किये जा रहे हैं। बैंड संगीत में वादन के उतार-चढ़ाव के लिए ड्रम, गिटार, पियानों जैसे वाद्यों का प्रयोग नौजवान वर्ग का ध्यान आकर्षित कर रहा है। जिसके चलते अनेक प्रकार के बैंड समूह आज भारत में विकसित हो चुके हैं। पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव के चलते तथा युवा वर्ग की पहली पसंद के कारण इस विधा की लोकप्रियता में और भी वृद्धि हो सकती है। यही संगीत का जीवंत रूप है।

संदर्भ

वनिता, डॉ. वेणु (2004). तबला ग्रंथ मंजूषा. कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।

शर्मा, प्रो. स्वतंत्र. (2010). भारतीय संगीत वैज्ञानिक विशलेषण. अभिनव पब्लिशिंग हाउस, इलाहबाद।

महेन्द्रू, डॉ. नीलम बाला. (2011). आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीयकरण में भारतीय संगीत की भूमिका. कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।

शर्मा, भवगतशरण (सितम्बर, 1963). भारतीय संगीत का इतिहास, संगीत कार्यालय, हाथरस।

मिश्र, डॉ. लालमणि (2002). भारतीय संगीत वाद्य. भारतीय ज्ञान पीठ, नई दिल्ली।

वसंत. (मार्च, 2007). संगीत विशारद, संगीत कार्यालय, हाथरस।

परांजपे, डॉ. शरदचन्द्र श्रीधर. (1985). भारतीय संगीत का इतिहास (वैदिक काल से गुप्तकाल तक), चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।